वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून)

(पर्यावरण,वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,भारत सरकार की एक स्वायत निकाय)

रांची - गुमला राष्ट्रीय राजमार्ग - 23, रांची (झारखण्ड) – 835303

वृक्ष उत्पादक मेला के अंतर्गत

बांस उत्पादक एवं उद्यमी सम्मेलन

14.02.2022

वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा दिनांक 14.02.2022 को आजादी का अमृत महोत्सव एवं वृक्ष उत्पादक मेला (Tree Grower's Mela) के अंतर्गत "बांस उत्पादक एवं उद्यमी सम्मेलन" का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता मुख्य अतिथि राय विश्वविद्यालय, झारखंड की माननीय कुलपति श्रीमती सविता सेंगर ने किया। कार्यक्रम में वन विभाग झारखंड से श्रीमती सुमिथा पंकज, वन संरक्षक, झास्कोलेम्फ के विकास अधिकारी, योजना एवं विकास अधिकारी (बाजार), झाम्कोफेड से तकनीकी अधिकारी श्रीमती नीलम कुमारी के अलावा बांस शिल्पकार, खरीददार, उद्यमी, उत्पादक सहित लगभग 48 प्रतिभागियों ने भाग लिया तथा कई स्टाल लगाकर बांस उत्पाद, अगरबत्ती, टोकरी एवं अन्य सजावटी तथा घरेलू उपयोग के सामग्रियों का प्रदर्शन किया गया जिसकी अच्छी बिक्री भी हुई।

कार्यक्रम का प्रारम्भ मुख्य अतिथि, निदेशक एवं वरीय अधिकारियों द्वारा द्वीप प्रज्वलन के साथ किया गया। श्रीमती रुबी सुसाना कुजूर ने कार्यक्रम संचालित करते हुए मेहमानों का परिचय कराया एवं श्री योगेश्वर मिश्रा, समुह समन्वयक अनुसंधान ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। स्वागत करते हुए प्रतिभागियों खासकर किसानों की उपस्थिति पर खुशी जाहिर किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक डा. शरद तिवारी ने सभी का धन्यवाद किया एवं विस्तार प्रभाग द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम की सराहना की एवं सफलता की कामना की। बांस के क्षेत्र में संस्थान के कार्यों की जानकारी दी।

कार्यक्रम का परिचय कराते हुए निदेशक, डा. नितिन कुलकर्णी ने बताया कि आज का कार्यक्रम का उदेश्य बांस उत्पादक किसानों एवं बांस उद्यमियों/खरीददारों के बीच परिचय व समन्वय स्थापित करने हेतु एक मंच प्रदान करना है। स्टाल के माध्यम से किसानों, प्रतिभागियों एवं स्टाल भ्रमणकारियों में बांस की उपयोगिता के प्रति जागरुकता पैदा करना इस कार्यक्रम के उदेश्यों में से है। मुख्य अतिथि का अभिवादन करते हुए डा. कुलकर्णी ने आग्रह किया कि शैक्षणिक संस्थानें इस मुहिम में बड़ी भूमिका निभा सकती है। बांस की उपयोगिता जंगली इमारती लकड़ी पर दबाव को कम करेगा। उन्होने कार्यक्रम में संबंधित अधिकारियों, उद्यमियों एवं किसानों की उपस्थिति पर संतोष व्यक्त करते हुए एक दूसरे से सकारात्मक

सहयोग की पहल करने की अपील की।

मुख्य अतिथि श्रीमती सविता सेंगर ने कार्यक्रम में आमंत्रण के लिए संस्थान का धन्यवाद किया एवं जीवित घेरान की जानकारी का जिज्ञासा रखने वाली को बांस संबंधी जानकारी का इतना बड़ा मंच उपलब्ध, इसपर खुशी जाहिर की। उन्होने बांस उत्पादन में बढ़ोत्तरी संबंधी कई बिंदुओं पर चर्चा की। उन्होने कहा कि शैक्षणिक संस्थानों के सहयोग से इस तरह के जागरुकता एवं ज्ञान-वर्धक कार्यक्रमों को आगे बढ़ाया जा सकता है। बांस उत्पादन बढ़ोत्तरी को सुनहरी क्रांति बताया एवं किसानों, उद्यमियों से आह्वान किया कि संस्थान से मदद लेकर इस क्रांति को हरित क्रांति की तरह सफलता की ओर ले जाना चाहिए। उन्होने आश्वासन दिया कि पर्यावरण संरक्षण में तथा बांस के क्षेत्र में जागरुकता हेतु आपसी सहयोग करेगी। इस तरह का कार्यक्रम बांस उत्पादन एवं उपयोग के क्षेत्र में काफी उपयोगी साबित होगा।

श्रीमती सुमिथा पंकज ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए वन विभाग के सहयोग का आश्वासन दिया। उन्होने कहा कि बांस उत्पादन न केवल जंगलों बल्कि गैर वनीय क्षेत्रों में भी बांस उत्पादन को प्रोत्साहित किया जाए। व्यावसायिक दृष्टि से लाभदायक बांस पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। हाथियों के उत्पात से बचने में भी बांस उत्पादन काफी मददगार साबित हो सकता है।

झास्कोलैम्प के श्री संजीत कुमार ने बांस विपणन एवं ब्रांडिग की आवश्यकता एवं सरलीकरण पर जोर दिया। झामकोफेड की श्रीमती नीलम कुमारी ने बांस विपणन के क्षेत्र में झामकोफेड के कार्यों को विस्तार से बताया।

तकनीकी सत्र में डा. योगेश्वर मिश्रा ने बांस उत्पादन तकनीक, विदोहन, बीज संग्रहण एवं उत्तक संवर्धन द्वारा बांस उत्पादन को विस्तार से बताया। उन्होने चीन से स्पर्धा के लिए व्यावसायिक दृष्टि से उपयोगी बांस के उत्पादन पर बल दिया। भारत सरकार के प्रयासों की चर्चा करते हुए डा. मिश्रा ने बताया की बांस उत्पादन को विस्तार देने के लिए सरकार ने इसे घांस श्रेणी में रखा है ताकि Transit Permit की आवश्यकता न हो। NBM, BTSG की स्थापना को बताते हुए श्री मिश्रा ने बताया कि सरकार की ओर से बांस उत्पादक को हर सम्भव सहायता दी जा रही है।

श्री मनीष कुमार, बांस उद्यमी, ओरमांझी ने बांस व्यावसाय से जुड़ी काफी रोचक तथ्यों से अवगत कराया। आसाम की चर्चा करते हुए उन्होने बताया कि बांस प्रसंस्करण के क्षेत्र में यहां काफी प्रगति हुई है। हमें उस तकनीक को झारखंड लाने की आवश्यकता है। बांस चारकोल की चर्चा करते हुए उन्होने बताया कि यह काफी उपयोगी है लेकिन इसके लिए पंजीकरण की आवश्यकता है। उद्यमियों की समस्या बताते हुए वनाधिकारियों से अनुरोध किया कि इसका सरल समाधान बांस उत्पादन को बल देगा। उपयोगकर्ता बढ़ेंगे तो निश्चित रुप से मांग के अनुरुप उत्पादन बढ़ेगा। उन्होने 1036 टन प्रतिदिन अगरबत्ती के उपयोग की चर्चा करते हुए बांस के उपयोग को दर्शाया।

श्री आदित्य कुमार, वैज्ञानिक, वन उत्पादकता संस्थान, रांची ने बांस के साथ कृषि वानिकी को विस्तार से बताया। उन्होने पूर्व के मिश्रक की चर्चा करते हुए बताया कि बांस के साथ भी कई तरह के उत्पाद लिए जा सकते है। हल्दी, ओल, कच्चू, पेक्ची एवं इसी तरह के कई उत्पाद के साथ बांस रोपण संभव है। उन्होने कई माडल को भी प्रतुत किया। उन्होंने संस्थान में स्थापित होने वाले Bamboo Common Facility Centre से उपलब्ध होने वाले उपकरणों की भी जानकारी दी।

बुड़मु, बुण्डु तथा लातेहार के किसानों ने भी अपनी बात रखी एवं कार्यक्रम की सराहना की। स्टालों की सराहना करते हुए उन्होने कहा कि आज तक बांस के उपयोग सुना करता था, आज हकीकत में बांस के इतने सुंदर उत्पाद देख पाया इसके लिए निदेशक महोदय को धन्यवाद।

परिचर्चा में किसानों के सवालों का निदेशक, समूह समन्वयक अनुसंधान एवं वन संरक्षक सुमिथा पंकज द्वारा संतोषप्रद समाधान बताया गया। बांस कटाई की नई तकनीक पर बल देते हुए श्रीमती पंकज ने बताया कि इस तरह के और भी तथा लगातार कार्यक्रम होने चाहिए जिससे किसानों में यह संदेश जाय कि अन्य कृषि उपज की अपेक्षा बांस की खेती काफी लाभदायक है।

श्रीमती रुबी सुसाना कुजूर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया एवं तकनीकी सत्र के समापन की घोषणा की।

श्रीमती सविता सेंगर, श्रीमती सुमिथा पंकज, निदेशक, समूह समन्वयक अनुसंधान आदि के द्वारा स्टाल भ्रमण किया गया एवं आवश्यक जानकारी ली गई।

अपराह्न किसानों, उद्यमियों, वनकर्मियों को माण्डर बांस रोपण क्षेत्र का भ्रमण कराया गया। भ्रमण के दौरान विभिन्न समयावधि में रोपित बांस के बढ़वार एवं प्रदर्शन से अवगत कराया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में विस्तार प्रभाग के श्री एस.ए.वैद्य, श्री बी.डी.पंडित, श्री सूरज कुमार, सूचना तकनीकी के श्री निसार आलम तथा अन्य प्रभागों के श्री सुशीत बनर्जी, श्री वैभव कुमार ठाकुर, श्री सुभाष चंद्र ने सराहनीय योगदान दिया।